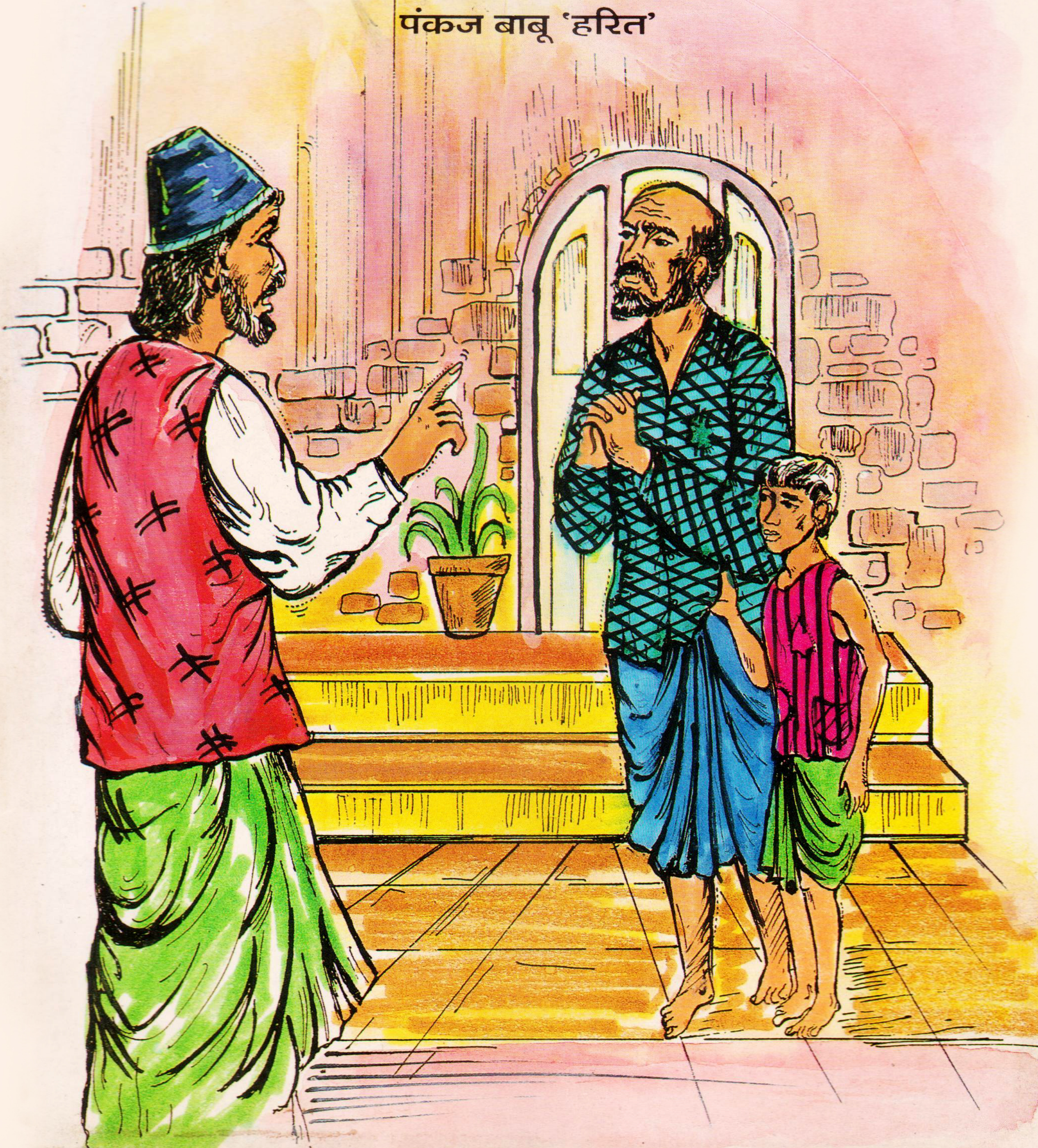
महाबली रुस्तम

पंकज बाबू 'हरित'



महाबली रुस्तम

(बाल उपन्यास)

पंकज बाबू 'हरित'

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

कार्तिक 1918 नवम्बर 1996

ISBN - 81 - 230 - 0515 - 6.

मूल्य : 20 रुपये

निदेशक, प्रकाशन बिभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित

विक्रय केन्द्र ● प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- कामर्स हाउस, करीमभाई रोड, बालर्ड पायर, मुंबई 400038
- 8, एस्प्लेनेड, ईस्ट कलकत्ता- 700069
- राजाजी भवन, बेसंट नगर, मद्रास-600090
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
- निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, तिरुअनंतपुरम्-695001
- 22/7, राममोहन राय मार्ग, लखनऊ-226001
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500001

Printed by B.M.S. Printer & Publishers
Phone : 4632395

प्रस्तावना

साहित्य के बाल-जगत में हर दिन कुछ न कुछ नया प्रयोग होता रहता है। बच्चों के लिए सभी वर्ग के लेखकों द्वारा निरंतर प्रयास किए जाते रहे हैं। उसी श्रृंखला में यह बाल पुस्तक बच्चों के लिए एक लघु प्रयास है।

प्रस्तुत बाल पुस्तक में रुस्तम नामक एक अत्यन्त बहादुर बालक की कहानी है जो एक बहुत ही गरीब व बुजुर्ग व्यक्ति का पुत्र है।

रुस्तम का संपूर्ण जीवन बचपन से लेकर पूर्ण अवस्था तक, दूसरों के लिए कुछ न कुछ करते हुए ही बीतता है। वह अनेक विलक्षण शक्तियों का स्वामी भी बन जाता है। यह विलक्षण शक्तियां उसकी ईमानदारी, बहादुरी, संयमशीलता, परिश्रम व परोपकार आदि गुणों के कारण ही उसे प्रदान की गई थी। जिनका उपयोग भी उसने फिर अच्छे-अच्छे कामों में ही किया।

रुस्तम अपने जीवन में विभिन्न अद्भुत व मायावी स्थानों का भ्रमण करता है। सहायता की पुकार करने वाला कोई इंसान हो अथवा जानवर रुस्तम हमेशा अपना सर्वस्व समर्पित करने के लिए उदधृत रहता है।

रुस्तम अपने संपूर्ण जीवन में अत्याचारों व अतातायियों का विनाश करता हुआ आगे बढ़ता रहता है। वह अपने जीवन का उद्देश्य असहायों की सहायता व दुष्टों का अंत करना बना लेता है।

इस पुस्तक के माध्यम से यह भी कहने का प्रयास किया गया है कि मानव एवं जानवर चाहे तो एक अच्छा सामंजस्य अपने अंदर उत्पन्न कर सकते हैं। इसमें भी मुख्यत: वस्तुस्थिति मानव पर ही अधिक निर्भर करती है। अगर मानव एक तालमेल अपने व पशुओं के मध्य स्थापित कर सके तो दोनों के बीच का भय व दूरी खत्म हो सकती है।

इस पुस्तक में कल्पनाओं का अत्यधिक प्रयोग किया गया है। विशेषत: जब रुस्तम शेर की पीठ पर सवार होकर एक विचित्र दुनियां की सैर करता है।

अंत में मेरे द्वारा यही आशा की जाती है कि बाल-वर्ग के पाठकों को मेरा यह प्रयास संभवत: रोमांचित करेगा और तभी मेरा श्रम सार्थक भी होगा।

पुस्तक के इस रूप में आने तक जिन महानुभावों से मुझे प्रेरणा व सहायता प्राप्त हुई उन सबके लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

पंकज बाबू 'हरित'

किसी समय उजबेकिस्तान में एक बूढ़ा रहता था। उसका इकलौता बेटा रुस्तम केवल दस साल का था। बूढ़ा बहुत गरीब था। कभी खाना मिल गया तो खा लिया नहीं तो यूं ही भूखे पेट सो जाना तो उनकी आदत बन चुकी थी।

एक बार वह अपने बेटे को लेकर अपने धनवान पड़ोसी सलीमबाय के पास आया और रोता हुआ बोला - "जमींदार साहब, हमारी मदद कीजिए। मैं और मेरा बेटा, आप जो भी हुक्म दें, करने को तैयार हैं। हम पर रहम कीजिए।"

सलीमबाय ने बूढ़े को सिर से लेकर पैर तक देखा और कहा– "मेरे पास मुफ़्त का खाना नहीं है। तू पहले अपना पिछला कर्ज चुका। अगर तू आजकल में ही मर गया, तो मेरा पैसा भी मारा जाएगा। ज़हां तक तेरे बेटे का सवाल है, वह तो किसी भी काम का नहीं है।"

बूढ़ा भौंचक्का रह गया। उसने कांपते हुए पूछा–"जमींदार साहब, मैंने आप से कौनसा कर्ज लिया था? आपने तो मुझे कभी कुछ नहीं दिया।"

"बकवास बंद कर, बूढ़े। तू मुझे धोखा देना चाहता है?" सलीमबाय बूढ़े को खा जाने वाली नजर से देखता हुआ चिल्लाया और उठकर बूढ़े को कोड़े मारने लगा।

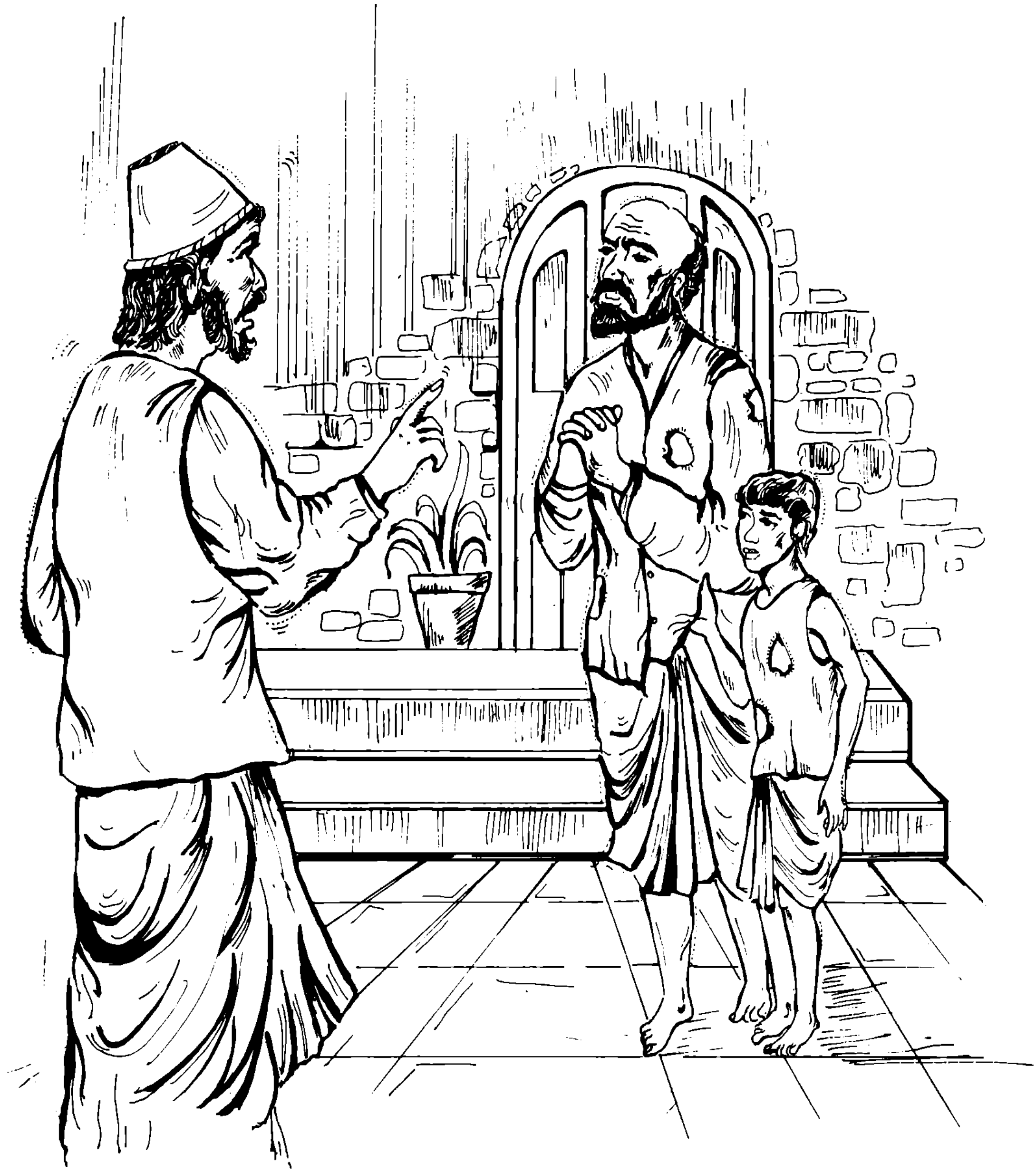
बूढ़ा मार न सह पाया और जमीन पर गिर पड़ा। उसकी आंखों से आंसुओं की धारें फूट पड़ीं। छोटा-सा रुस्तम कुछ भी न समझ पाया और अपने बूढ़े पिता से लिपटकर रोने लगा। थोड़ी देर बाद होश आने पर बूढ़ा गिड़गिड़ाता हुआ बोला–"अगर मैं भूल गया हूं तो मुझे समझाइये कि मैंने कब और कितना कर्ज आप से लिया था और मुझे कितना चुकाना है।"

रुस्तम अपने पिता की छाती से चिपटा पड़ा था। सलीमबाय ने लड़के को खींचकर एक ओर धक्का दिया और बूढ़े का गरेबान पकड़कर कड़े स्वर में बोला–"कान खोलकर सुन ले, धोखेबाज बूढ़े, जब तेरी पत्नी मरी थी, तो लाश नहलाने वाली को पैसे किसने दिए थे। किसकी गाड़ी में तू बुजुर्गों को कब्रिस्तान ले गया था? चेहलुम त्यौहार के दिन सैकड़ों आदमियों को पुलाव किसने खिलाया था? तू भूल गया कि तू और तेरा बेटा पुलाव पर कैसे टूट पड़े थे?"

लालची सलीमबाय के सफेद झूठ पर बूढ़े को बहुत गुस्सा आया। पर अपने बुढ़ापे और भूख के कारण वह कुछ भी न कर पाया। उसमें तो उठकर खड़ा होने तक की हिम्मत भी नहीं थी।

तभी वहां इमाम भी दरवाजा खोलकर अंदर आ गया। "अगर तुझको विश्वास न हो तो, इनसे भी पूछकर देख ले।" जमींदार विश्वास के साथ बोला। इमाम ने भी जी हुजूरी के स्वर में सलीमबाय से पूछा – "क्या मामला है? आप मुझसे क्या पूछना चाहते हैं।"

इस पर सलीमबाय बोला–"पिछले साल चेहलुम के मौके पर हमने मुहल्ले को जो पुलाव खिलाया था, उस दिन आपने इस बूढ़े की पत्नी के लिए दुवा मांगी थी या नहीं?"



इमाम अब तक सलीमबाय का असली मतलब समझ चुका था। उसने बड़े आत्म विश्वास के साथ कहा– “बिल्कुल ऐसा ही हुआ था। हमने इस दावत में बूढ़े की पत्नी के लिए फातिहा पढ़ा था।”

सलीमबाय बूढ़े को घूरते हुए बोला– “सुना तूने ? एक पड़ोसी की तरह मैंने तुझ पर रहम खाकर अपना पैसा खर्च किया, एक नेक काम किया और तू धोखेबाज बूढ़े इस सबसे इंकार कर रहा है।”

इमाम भी सलीमबाय की तरफदारी करते हुए बोला– “तुम ऐसी गुस्ताकी कभी मत करना। तुम्हें तो सलीमबाय का शुक्रगुजार होना चाहिए। चेहलुम के पुलाव का सारा खर्चा तुम्हें अपने ऊपर ले लेना चाहिए।”

बूढ़ा फिर से फूट-फूट कर रोने लगा। “हम पर क्या पहले ही कम मुसीबत पड़ी थी। हमें रोटी का एक टुकड़ा तक तो मिलता नहीं, कभी पेट भर नहीं पाते और इस पर यह इतना बड़ा कर्ज भी हमारे सिर पर लद गया।” बूढ़ा रोता हुआ बोला और उसने रुस्तम को अपने सीने से लगा लिया। “मेरे गरीब बेटे, मैं बूढ़ा हो गया, मेरी जिंदगी तो कट गई, पर अब तेरा क्या होगा ?”

इमाम बूढ़े को घूरता हुआ बोला– “अरे बेवकूफ रोता क्यों है ? जमींदार साहब तुझसे यह तो नहीं कह रहे हैं कि तू इसी वक्त कर्ज चुका। जब तेरे पास धन आ जाए, तब दे देना। बस इंकार मत करना। कुछ दिनों में तेरा यह बेटा भी बड़ा हो जायेगा और कोई भी काम सीखकर कमाने लगेगा, तब तू कर्ज चुका देना।”

इमाम की इस बात पर बूढ़ा आश्चर्यचकित हो गया। वह सोचने लगा कि मुझे इमाम ने इतना समय क्यों दिया, पर हां कहने के अलावा उनके पास और कोई चारा नहीं था।

इमाम ने बूढ़े से दुबारा कहा– “केवल हां कहने से ही काम नहीं बनेगा। पहले सलीमबाय से सुन ले कि तुझे उनका कितना कर्ज चुकाना है।”

बूढ़ा असमंजस में पड़ा चुपचाप सुनता रहा। इमाम ने कागज और कलम लेकर कुछ लिखा और फिर शिष्टतापूर्वक जमींदार से बोला– “जनाब बूढ़े ने आपसे कितना कर्ज लिया था।”

जमींदार तीखी मुस्कान लाते हुए बोला– “सौ असर्फियां।”

बूढ़े ने अपने जीवन में कभी एक अशर्फी को भी हाथ नहीं लगाया था। इसलिए सौ अशर्फियों का नाम सुनकर वह घबरा गया। मगर क्योंकि वह हां पहले ही कह चुका था, इसलिए उसे कर्ज पर अंगूठा लगाना पड़ा। इमाम के कहने पर रुस्तम को भी यही करना पड़ा।

“अब तुम लोग जा सकते हो। तेरा बेटा जब कमाने लगेगा तो यह कर्ज चुका देगा।” उसने कटाक्षपूर्ण स्वर में कहा।

कितना दुर्भाग्यशाली था वह बूढ़ा जो मांगने तो आया था रोटी मगर वहां से वापस लेकर लौटा सौ अशर्फियों का कर्ज।

घर की ओर लौटते समय बूढ़ा अपने बेटे के साथ अपने पड़ोसी सिद्दीक मोची के पास पहुंचा। सिद्दीक को अपनी मुसीबतें बताते हुए बूढ़े ने उससे पूछा "अब तुम्हीं बताओ कि सिद्दीक इंसाफ किससे मांगू।"

पड़ोसी एक गहरी सांस लेकर निराशापूर्ण स्वर में बोला—"तुम जाल में फंस गये हो दोस्त। अब कुछ नहीं किया जा सकता है। इस शहर का हाकिम भी नीच सलीमबाय का दामाद है। अब तो बस एक ही रास्ता रह गया है कि तुम जो कुछ हो गया है, उसे मान लो।"

बूढ़ा घर लौटकर रात भर सोचता रहा। तरह-तरह के विचार बूढ़े के दिमाग में आते रहे और इसके साथ-साथ भूखे बेटे की सिसकियां भी सुनाई देती रहीं। इतना बड़ा दुःख बूढ़े को बर्दाश्त नहीं हो रहा था।

आधी रात बीत चुकी थी। सब मीठी नींद सो रहे थे, पर बेचारा बूढ़ा आहें भरता हुआ तड़प रहा था। उसी समय फाटक को खोलकर तीन अजनबी आदमी बूढ़े के सिरहाने आकर खड़े हो गये। उनमें से एक ने बूढ़े को लातमार कर कहा— "उठ धोखेबाज।"

बूढ़ा इन बिन बुलाए मेहमानों के अप्रत्याशित व्यवहार से आश्चर्यचकित हो गया और बोला— "आप लोगों को मुझसे क्या चाहिए?"

"घर खाली कर। इसी वक्त।" वह आदमी गरज कर बोला। बूढ़े को अब भी अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। फिर भी वह संभल कर बोला "आप को शायद गलतफहमी हो गई है, यह घर तो मेरा है।"

तभी उन लोगों में से दूसरा आदमी बोला— "तू हमें धोखा नहीं दे सकता। हमें शहर के हाकिम ने भेजा है। तूने एक साल पहले सलीमबाय को यह मकान बेचकर सौ अशर्फियां नकद ली थी।"

बूढ़े ने अपने सिर पर एक नई मुसीबत आती महसूस करके रोते हुए कहा "मैंने मकान कभी नहीं बेचा और न ही बेचूंगा।" इस पर तीसरे आदमी ने गुस्से में आकर एक कागज दिखाया और कहा— "तू कहता है मैंने मकान नहीं बेचा है और यह रसीद किस बात की है। इस पर तेरे और तेरे बेटे के अंगूठों के निशान हैं।" हाकिम ने बहुत नाराज होकर कहा है, "अगर वे लोग खुद मकान में से न जाए या जिद करें तो उन्हें घसीटकर बाहर फेंक देना और काल कोठरी में बंद कर देना।"

ऐसा आदेश सुनकर बूढ़े के पैरों तले से जमीन खिसक गई। अपने बेटे को लेकर उसे अपना घर छोड़ देना पड़ा। जिसमें वह पैदा हुआ था। इतने सालों से रहा और बूढ़ा भी हुआ था। बूढ़े का रोना धोना सुनकर उसका पड़ोसी सिद्दीक और उसका पूरा परिवार भी जाग गया। वे भागे-भागे आए। बूढ़े पर आई नई मुसीबत को देखकर उनके भी आंसू आ गये। अनायास ही उनके मुंह से एक ठंडी और गहरी सांस निकल गई।

सिद्दीक की पत्नी ने बूढ़े को मक्का की एक रोटी दी और बोली "अल्लाह आप को हर समय रोटी देता रहें।"

इसके बाद बूढ़ा रुस्तम को पीठ पर लादकर पहाड़ों की ओर चल दिया।

बूढ़ा काफी समय तक पहाड़ी रास्तों में भटकता रहा। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। जो कभी-कभी उसके भूखे बेटे की सिसकियों से हट जाता था। बीच-बीच में रुस्तम यह सवाल भी करता था– "पिताजी, हम कहा जा रहें हैं? बूढ़ा अपने बेटे को जवाब में कुछ नहीं कह पाता था, क्योंकि उसे स्वयं मालूम नहीं था कि वह कहां जा रहा है। थका हारा वह आर्चा के नीचे एक झुरमुट में रुका। आर्चा के एक छोटे पेड़ के तने का सहारा लेकर वह बैठ गया। और आंखें बंद करके कुछ सोचने लगा।

जब उसने आंखें खोली तो वह हक्का-बक्का रह गया। उसके सामने की पहाड़ी पर एक बडा भालू अपने बच्चे के साथ खड़ा हुआ था और उस पर हमला करने ही वाला था। दोनों भालू छोटे-छोटे कदमों से चलकर उनकी तरफ आने लगे। बेचारा बूढ़ा सांस रोककर पत्थर सा बना वहीं खड़ा रह गया। उसकी ताकत तक जवाब दे चुकी थी और बचने का उसे कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था।

रुस्तम को सीने से चिपटा कर बूढ़ा रो पड़ा। रुस्तम अपनी ओर बढ़ते हुए खूंखार जानवरों को देखकर डर के मारे चीख उठा। रुस्तम की चीख सुनकर बूढ़े ने बंद आंखें किए हुए ही सोचा कि अब उसका बेटा बच नहीं पायेगा। और बेहोश हो गया।

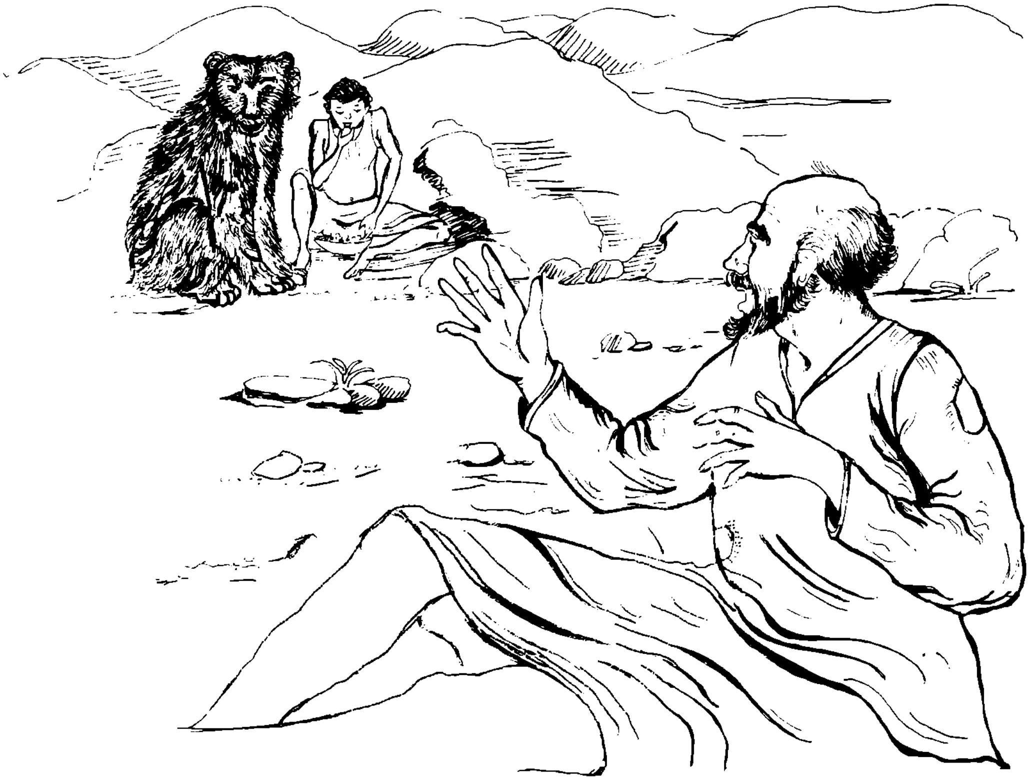
पर भालू धीरे-धीरे उनके पास पहुंचा। रुस्तम को बूढ़े की बांहों में से सावधानी पूर्वक निकालकर उसका हाथ अपने बच्चे के हाथ में थमा दिया। और बूढ़े को उठाकर अपनी मांद में ले आया।

प्रातः होने पर जब सूरज निकला तो बूढ़े ने आंखें खोली। उसने देखा कि वह तो जीवित है मगर उसका बेटा उसके पास नहीं है। उसने घबराकर चारों तरफ देखा। एक कोने में बैठा उसे रुस्तम दिखाई दिया जो भालू के एक छोटे से बच्चे के साथ बैठा शहद खा रहा था। बूढ़ा भौचक्का रहा गया। एक बार तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ। यह जानने के लिए कि वह जो देख रहा है सपना है या सच, उसने रुस्तम को आवाज दी।

उधर रुस्तम भी काफी समय से अपने पिता के जागने का इंतजार कर रहा था। उसने जैसे ही अपने पिता की आवाज सुनी, वह फौरन भाग कर उसके पास पहुंचा और बोला– "हां पिताजी। अब आप कैसे है? आप ने बहुत दिनों से कुछ नही खाया। उठिये और थोड़ा सा शहद खा लीजिए।"

"तुझे इससे डर नहीं लगता क्या?" बूढ़े ने रुस्तम से केवल एक ही प्रश्न किया।

"यह मेरा दोस्त बन गया है," रुस्तम बोला। "इसकी मां हम दोनों को यहां ले आई है। आप को यहां छोड़कर वह मुझसे कह गई है कि तुम लोग शोर मत करना। यह जितनी देर सोयें, सोने देना। मेरा बेटा तुम्हारा दोस्त है, तुम दोनों शहद खाओ मैं अभी वापस आती हूं।"



बूढ़ा आश्चर्यचकित होकर रुस्तम को देखता रहा। उसे अब भी रुस्तम की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। इसी बीच स्वयं रीछनी भी वहां पहुंच गई थी। उसके एक हाथ में बूढ़े के लिए रोटियां थीं और दूसरे हाथ में दूध से भरा एक बर्तन।

रीछनी को देखते ही बूढ़ा उठ खड़ा हुआ और उसने झुककर उसे अभिवादन किया। रीछनी दूध और रोटी बूढ़े के हाथ में देती हुई बोली– "बैठिये आप तकलीफ मत कीजिए। मैं आप के लिए दूध और रोटी लाई हूं। पहले नाश्ता कर लीजिए, फिर बातें करेंगे।"

रीछनी का अपने प्रति इतना मधुर व्यवहार देखकर बूढ़े को बड़ा आश्चर्य हुआ। रीछनी ने जब बूढ़े को आशंकित देखा तो वह फिर बोली– "आप मेरे बारे में कुछ गलत मत सोचिये। यहां के बहुत से गड़रिये और किसान मेरे मित्र हैं। वे लोग हाकिमों और जमींदारों के यहां भेड़ें चराते हैं और खेती करते हैं। यह दूध और रोटियां मैं उन्हीं से मांग कर लाई हूं।"

ऐसा कह कर रीछनी लौट गई। कुछ देर बाद जब रीछनी पुनः वापिस आई तो बूढ़े ने उसे अपना सारा दुःखड़ा सुनाया। उसे सुनकर रीछनी बोली– "आप मुझे अपनी बेटी ही समझिये और मेरे बच्चे को अपने बेटे का दोस्त मानिये। हम लोग यहां मिल-जुल कर रहेंगे।"

धीरे-धीरे समय बीतता गया। वे सब मिलजुल कर सुख से रहने लगे। बूढ़ा दिन में पहाड़ों में लकड़ियां काटता और रीछनी रात को उसे उठाकर शहर के पास रख आती जहां बूढ़ा उसे बेचता। इस तरह उनकी जीविका आसानी से चलती रही।

इधर रुस्तम भी रीछनी के बच्चे के साथ-साथ खेलता कूदता बड़ा होने लगा।

गड़रियों ने एक बार रुस्तम को रीछ के बच्चे के साथ कुश्ती लड़ते हुए देखा और उससे प्रभावित हुए बिना न रह सकें। पांच-छः साल में ही रुस्तम की ख्याति चारों तरफ फैल गई। कोई भी ऐसा पहलवान नहीं रहा जो रुस्तम का मुकाबला कर सकें। इस तरह रुस्तम, महाबली रुस्तम के नाम से जाने जाना लगा।

एक बार जब रुस्तम और उसका बूढ़ा पिता शहर में लकड़ी बेचकर लौट रहे थे, तो रास्ते में उन्हें अचानक आकर्षक चोंगा पहने हुए और चितकबरे घोड़े पर बैठा एक आदमी दिखाई दिया। जो चाबुक घुमा रहा था। उसकी ओर इशारा करते हुए बूढ़े ने रुस्तम से कहा– "यही वह सलीमबाय है जिसने हमारा घर छीनकर हमें बेघर कर दिया था।"

सलीमबाय जरुरत से ज्यादा खुश दिखाई दे रहा था। बीच-बीच में वह अपनी मूंछों पर ताव देकर मुस्करा भी देता था। लोग सब कुछ भूलकर उसके चारों ओर खड़े हुए किसी विशेष चीज को देख रहे थे।

अचानक रुस्तम को उसी भीड़ में से एक कराहने की आवाज सुनाई दी। उसे लगा कि यह आवाज तो उसकी जानी पहचानी है।

रुस्तम तुरंत भागकर भीड़ के अंदर पहुंच गया। उसने देखा कि उसके भाई रीछ के बच्चे को शिकारियों ने पकड़कर ऊंट पर लाद रखा है।

रुस्तम ने वहीं पर कुछ लोगों से पूछा कि माजरा क्या है, तो उसे पता चला कि सलीमबाय ने अपने आदमियों के साथ जंगल में से उसके भाई को पकड़ लिया है और उसे वह हाकिम को भेंट करना चाहता है।

सारी बातें जानते ही महाबली रुस्तम का पारा सातवें आसमान को छूने लगा। वह लपक कर रीछ के बच्चे के पास जा पहुंचा। पल भर में ही उसने सारी रस्सियां तोड़ डाली और अपने भाई को छुड़ाकर गले से लगा लिया।

सलीमबाय के शिकारी यह नजारा देख कर भौंचक्के रह गए। वे सब मिलकर रुस्तम पर टूट पड़े। मगर वे नहीं जानते थे कि रुस्तम आखिर चीज क्या है। जो भी शिकारी रुस्तम के नजदीक आया उसे ही रुस्तम ने अपने सिर पर उठाया और घुमाकर दूर फेंक दिया।

जिसने भी एक बार रुस्तम की ताकत आजमा ली, उसने दुबारा उसके पास से भी गुजरने का साहस नहीं किया। जब सब शिकारी भाग गये तो रुस्तम सलीमबाय की ओर लपका। मगर सलीमबाय तो जैसे भागने के लिए तैयार ही खड़ा था। रुस्तम को अपनी ओर देखते ही उसने अपना घोड़ा सरपट दौड़ा लिया।

इसके बाद रुस्तम भी रीछ के बच्चे को अपने साथ लेकर जंगल चला गया। जिसने भी रुस्तम की असाधारण शक्ति, फूर्ति और बहादुरी देखी थी या उसके बारे में सुना था वह उसकी प्रसंशा के गीत गाए बिना न रह सका। थोड़े दिनों में ही उसका डंका जंगल के साथ-साथ पूरे शहर में बजने लगा।

उधर सलीमबाय की ऐसी हालत हो गई कि जब भी उसे रुस्तम का ख्याल आता उसकी कंपकपी छूट जाती। हाकिम ने भी गुस्से में आकर हुक्म जारी कर दिया– "किसी भी कीमत पर उस पहलवान को पकड़कर मेरे सामने हाजिर किया जाए, जिसने शिकारियों से उस रीछ के बच्चे को छीन लिया था।"

पर लगता था कि जैसे किसी के कान पर जूं तक भी नहीं रेंगी थी। किसी की भी हिम्मत नहीं हुई कि जाकर रुस्तम को पकड़े। अगर हाकिम किसी को जबरदस्ती भेज भी देता तो वह लौटकर कह देता– "मुझे तो वह मिला ही नहीं।"

गरीब, भूखे और लाचार लोग जिन्हें शहर में खाने को कुछ न मिल पाता था रुस्तम की शरण में आकर अपने को सुरक्षित महसूस करने लगे। वे भी रुस्तम के साथ जंगल में लकड़ी काटने जाते और अपनी जीविका चलाते।

सलीमबाय रुस्तम के बारे में काफी विस्तार से जानना चाहता था। ऐसे ही एक बार सलीमबाय को किसी ने बताया कि रुस्तम उसी बूढ़े का बेटा है जिसे उसने उसका घर छीनकर निकाल दिया

था। उसे यह भी पता चला कि अब वह आजादी से पहाड़ों में रह रहा है और जमींदारों के अत्याचारों से तंग आकर शहर से भागने वाले गरीबों को शरण व मदद दे रहा है।

सलीमबाय यह सब जानकर भड़क उठा और उसने फौरन शहर के हाकिम को सारी बातों से अवगत कराया। हाकिम ने तुरंत एक सौ सैनिकों के साथ मिलकर उन पहाड़ी जंगलों पर चढ़ाई कर दी। उसने सैनिकों को यह लालच देकर तैयार किया था कि जो भी रुस्तम को जिंदा पकड़कर लायेगा उसके साथ मैं अपनी बेटी की शादी कर दुंगा और उसे सौ सैनिकों का अफसर बना दुंगा।

हाकिम के सैनिकों ने अपने घोड़े घने जंगलों की तरफ सरपट दौड़ा दिए। अंत में वे जंगल में स्थित एक छप्पर के पास पहुंचे।

हाकिम बड़े घमंड और चालाकी से अपने सैनिकों से बोला– "हम लोग इस छप्पर में छिप जातें हैं नहीं तो हमारे आने की खबर पाकर रुस्तम पहाड़ों में दुबक जायेगा। हम लोग रात में चुपके से उस पर हमला करके उसे पकड़ लेंगे।

इधर बूढ़ा तो प्रतिदिन की तरह उपने साथियों के साथ शहर में लकड़ियां बेचने गया था। रुस्तम अपने दोस्त के साथ एक छोटी सी पहाड़ी पर सो रहा था। शीतल हवा रुस्तम के बदन को स्पर्श करते हुए बह रही थी। अचानक उसे रीछनी का स्पर्श महसूस हुआ। उसकी आंखें खुल गई। रीछनी उसे उठाकर ले जाने की तैयारी कर रही थी। रुस्तम ने उससे पूछा– "क्या हुआ ?" तुझ पर हमला करके पकड़ना चाहते हैं। शहर का हाकिम अपने सौ सिपाहियों के साथ यहां पास में एक छप्पर में छिपा हुआ बैठा है। एक सुरक्षित जगह पहुंचकर रीछनी ने रुस्तम को उतार दिया।

"आप मुझे यहां क्यों लाई हैं ?" रुस्तम ने प्रश्न किया। "मैं तुझे बचाना चाहती हूं।" रीछनी का जवाब था।

रुस्तम ने इस बात का विरोध करते हुए कहा–" आखिर हम कब तक बेकार ही उन लोगों से डरकर भागते रहेंगे? चलकर उनका मुकाबला करना चाहिए। "

रीछनी रुस्तम को प्यार से समझाती हुई बोली– "वे लोग बहुत ज्यादा हैं और उन लोगों के पास घोड़े और हथियार भी हैं। दुर्भाग्य से हमारे साथी भी शहर गये हुए हैं।"

उसी समय रुस्तम का मित्र रीछ का बच्चा भी घूमता घामता हुआ वहां पहुंच गया। रुस्तम उसे देखकर बहुत खुश हुआ।

रीछनी ने पुनः रुस्तम को समझाना चाहा मगर महाबली नहीं माना। तब उसने पूछा– "आखिर तू चाहता क्या है ?" "हम खुद ही दुश्मन पर हमला करेंगे।" रुस्तम ने रीछ के बच्चे की ओर नजरें घुमाते हुए कहा। रीछनी के बच्चे ने भी अपना मुंह ऊंचा उठाकर दिखाया कि वह कितनी बहादुरी से दुश्मन से जूझेगा और रुस्तम की कमर में बांहें डालकर कहने लगा– "अरे ये सैनिक तो हमारा क्या मुकाबला करेंगे हम इन्हें ही उल्टा अच्छी तरह मजा चखायेंगे।"

उसी समय तीनों लोगों ने पहाड़ की हल्की ढलान पर हाकिम के घुड़सवारों को एड़ लगाते



हुए और तलवारें घुमाते हुए देखा। दुश्मन उन तीनों के लगातार निकट आ रहे थे। अब रुस्तम को हाकिम, उसके सैनिकों और घोड़ों की भी आवाजें सुनाई देने लगीं।

थोड़ी देर बाद सैनिक घोड़ों से उतर कर पत्थरों के पीछे अपने को छिपाते हुए रुस्तम की गुफा की ओर बढ़ने लगे। रुस्तम को अब और ज्यादा देर करना ठीक नहीं लगा। रुस्तम की गुफा के पास ही पत्थरों का बहुत बड़ा ढेर लगा हुआ था। रुस्तम, रीछनी और उसके बच्चे बड़े-बड़े पत्थर उठाकर दुश्मनों पर फेंकने लगे। जमकर लड़ाई होने लगी। दुश्मन इस अचानक पत्थर की बौछार से घबरा गये। कुछ दुश्मनों के सिर कुचल गये। कुछ की रीढ़ की हड्डियां टूट गई और बहुत से कलाबाजियां खाते हुए पहाड़ी के उस ढलान से नीचे तक लुढकते चले गये।

रुस्तम और रीछ का बच्चा दोनों बहुत खुश हुए क्योंकि दुश्मनों की संख्या में निरंतर कमी आती जा रही थी। मगर साथ में रुस्तम को भी एक परेशानी का सामना करना पड़ा। उसके द्वारा लगाया गया पत्थरों का ढेर भी समाप्त हो चला था।

उसी क्षण दोनों ने देखा कि रीछनी उनके पास से एक दम गायब हो गई है। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। साथ ही में उनका उत्साह भी इस बात से थोड़ा कम हो गया। इस बीच हाकिम और बचे हुए सैनिक रुस्तम के बिल्कुल निकट पहुंच गये। रुस्तम यूं ही दुश्मनों पर टूट पड़ना चाहता था मगर तभी रीछनी आर्चा का मोटा तना उठाकर ले आयी। वह तने को घुमाते हुए लगातार आगे बढ़ती गई। तने की घातक चोटों से दुश्मन एक के बाद एक जमीन पर गिरने लगे। बचे हुए सैनिक और हाकिम सिर पर पैर रखकर भाग लिए।

दोनों दोस्तों और रीछनी के हाथों दुश्मनों का काफी सामान हाथ लगा। हाकिम की लज्जाजनक हार और लड़ाई के मैदान से उसका पीठ दिखाकर भागना लोगों को उसी दिन मालूम पड़ा।

हाकिम लज्जा से अपने किले में जा छिपा। चारों तरफ से उसकी हार का मजाक उड़ने लगा था। आखिर कुछ दिनों बाद जब हाकिम किले से बाहर निकल कर आया तो उसने ऐलान किया कि रुस्तम को जिंदा पकड़कर उसके महल में लाने वाले आदमी को उस आदमी के वजन के बराबर सोना देगा।

मगर हाकिम की हार से तो रुस्तम से और भी ज्यादा लोग डरने लगे थे और उसकी प्रसंशा करने लगे थे।

इमाम की एक मां थी। जो बूढ़ी पोपली, गंजी और कानी थी। वह इनाम के लालच में आकर हाकिम के पास जा पहुंची और बोली– "हाकिम मैं इस छोकरे को पकड़कर तुम्हारे सामने हाजिर कर सकती हूं। मगर क्योंकि मैं बहुत बूढ़ी और कमजोर हूं इसलिए तुम्हें मेरे वजन का दुगना सोना देना पड़ेगा।"

"अगर तुम मेरा यह काम कर दो तो, मैं तुम्हारी सारी इच्छायें पूरी कर दूंगा।" हाकिम बोला। बुढ़िया ने हाकिम को समझाते हुए कहा "इस काम के लिए तुम मुझे पन्द्रह ऐसे वफादार आदमी दो जिनके चेहरे पर दाढ़ी या मूंछ का एक भी बाल न हो। और ध्यान रखना जब मैं उस छोकरे

को पकड़कर तुम्हारे सामने हाजिर करूंगी उस दिन से तुम बिना मेरी सलाह के हुकूमत का कोई भी काम नहीं करोगे।

हाकिम ने तुरंत बुढ़िया की शर्त मान ली। और दूसरे दिन बुढ़िया की अगुवाई में पन्द्रह बिना दाढ़ी मूंछ वाले आदमी औरतों के भेष में पहाड़ों की ओर चल दिये।

रास्ते में बुढ़िया ने उन्हें आपस में बुरी तरह लड़ने-झगड़ने और मारपीट करने का आदेश दिया। आदेश के अनुसार ही वे लोग रास्ते में आपस में बुरी तरह लड़ते-झगड़ते और मारपीट करते हुए चलने लगे।

खून में लथपथ और सारे शरीर में खरोचें और चोटों के निशान लिए हुए ये नकली औरतें और लड़कियां आर्चा के जंगल में पहुंच गई। पास ही में रुस्तम और उसके अन्य साथियों के घर थे। बुढ़िया और उसके साथियों की दर्द भरी आवाजें सुनकर रुस्तम अपने सारे लकड़हारे दोस्तों के साथ उनके पास भागा आया और पूछने लगा कि उनकी यह हालत कैसे हुई और किसने की।

बुढ़िया रोते हुए रुस्तम के पांव पकड़कर बोली —"अगर हमें रुस्तम नहीं मिला तो वह जालिम हम सबको मार डालेगा और बरबाद कर देगा। रुस्तम मिला तो वह जरूर हमारी मदद करेगा और हमें मारने से बचा लेगा।"

"आप कृपया रोए नहीं। मैं ही रुस्तम हूं, क्या हुआ? मुझे सब विस्तार से बताइये, जिससे मैं आप की मदद कर सकूं।" रुस्तम सहानुभूति दिखाते हुए बोला। उसी क्षण सारी की सारी पन्द्रह औरतें रुस्तम के पैरों में गिरने का नाटक करने लगीं। बुढ़िया रो-रोकर कहने लगी—"हमारी आंखों के तारे हमें इस जालिम जल्लाद से बचा ले। तुझसे हार कर यह जालिम हम लोगों से बदला ले रहा है। इस शहर के हाकिम ने हमें, हमारे पतियों और बच्चों को एक जगह इकट्ठा होने का आदेश दिया और उसके बाद हम सबको डंडोसे बुरी तरह पीटकर हमारे पतियों को काल कोठरी में कैद कर लिया और बच्चों को पिंजरों में बंद करके तपती धूप में लटकवा दिया। उसने हमारे घर छीन लिए और हमें शहर से भगा दिया। अब बताओ हम क्या करें।"

"बहनों, रोओ मत। धीरज रखो, तुम लोग हमारे साथ रहो। हम तुम्हारे पतियों और बच्चों को बचाने का कोई न कोई रास्ता ढूंढ निकालेंगे।" रुस्तम ने दिलाशा देते हुए कहा।

रुस्तम और उसके दोस्त उन सभी को अपने साथ ले गये और खाना खिलाया और साथ में उनके रहने का भी इंतजाम कर दिया। वे औरतें दिन में तो रुस्तम के साथ में जाकर लकड़ियां काटती और रात में अपने-अपने स्थान पर सो जाती।

एक बार जब रीछनी और उसका बच्चा कहीं दूर गये हुए थे। और रुस्तम नींद न आने के कारण अकेला बैठा कुछ सोच रहा था। उसी समय रुस्तम के पिता का पुराना मित्र सिद्दीक मोची उसके पास आकर बैठ गया और रुस्तम से कहने लगा— "लगता है तुम अकेले बैठे कुछ ऊब गये हो, तुम चाहो तो मैं तुम्हें एक सच्ची कथा सुना सकता हूं।"

"वाह क्यों नहीं। बड़ी खुशी से सुनुंगा।" रुस्तम ने जवाब दिया।

मोची सिद्दीक ने अपनी कथा प्रारंभ की–

एक मोची था। वह पुराने जूतों की मरम्मत करता था और किसी तरह अपना पेट भरने लायक पैसा कमा लेता था। उसकी समझदार और सुंदर बेटी उसके जीवन का एक मात्र सुख और सहारा थी।

हालांकि मोची बहुत गरीब था, पर उसकी बेटी के सुंदर होने के कारण बहुत से अमीर और जमींदार उसकी बेटी के साथ अपनी शादी तय करने के लिए निमंत्रण भेजते रहते थे। मोची ने उनमें से किसी भी प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। क्योंकि वह जानता था कि उसकी बेटी को पड़ोसी के सुंदर और चतुर लड़के से प्यार है। जिसके साथ वह खेलती कूदती बड़ी हुई थी।

शहर के हाकिमों के जुल्मों से तंग आकर बेचारे लड़के और उसके परिवार के लोगों ने एक दिन अपना घर ही छोड़ दिया। पिता और पुत्र ने पहाड़ी जंगल में शरण ली। समय बीतता रहा और लड़का सुंदर और शक्तिशाली युवक बन गया।

उत्पीड़ित और गरीब लोगों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण और प्रेमपूर्ण व्यवहार के कारण पहाड़ों के आस-पास के रहने वाले लोग युवक का बहुत सम्मान करते थे। वह असाधारण रूप से शक्तिशाली और साहसी था। उस वीर से ईर्ष्या करने वाले दुश्मनों की उसके पास फटकने की भी हिम्मत नहीं होती थी। मोची और उसकी बेटी मन ही मन इस सज्जन और भले, बहादुर नौजवान पर गर्व करते थे। वे बड़ी उत्सुकता से उस दिन की प्रतीक्षा करते रहते थे, जब वह उनसे मिलने आयेगा। पर कई साल बीत गये वह बहादुर उनसे एक बार भी मिलने नहीं आया।

रुस्तम मोची की इतनी सी कहानी सुनकर ही बोल उठा– "उस बहादुर ने यह अच्छा नहीं किया।"

सिद्दीक मोची कहानी आगे सुनाने लगा– मोची की बेटी की खूबसूरती के बारे में शहर के हाकिम ने सुना। अपनी चार पत्नियों के होते हुए भी उसने मोची की बेटी को अपनी पांचवीं पत्नी बनाने के इरादे से कीमती तोहफों के साथ शादी का प्रस्ताव भेजा, पर मोची ने उस हाकिम का प्रस्ताव भी ठुकरा दिया। तब हाकिम के आदेश से मोची के हाथ पैर बांधकर, पानी में फेंक दिया गया। उसका घर जला दिया गया और उसकी बेटी को जबरदस्ती वहां से हाकिम के घर ले जाया गया।

पिता को तो मछुओं ने बचा लिया, पर बेचारी बेटी, तरह-तरह की यातनाएं सहते हुए भी उस नौजवान की प्रतीक्षा करती रही। कुछ समय बाद उस लड़की का पिता मछुओं को छोड़कर उस नौजवान को अपनी बेटी का हाल सुनाने के लिए पहाड़ पर पहुंचा।

सिद्दीक मोची तो अपनी कहानी आगे भी सुनाना चाहता था पर अचानक हाकिम की सताई हुई औरतों में से एक दौड़कर रुस्तम के पास पहुंची और बोली– "रुस्तम जान, आप की धर्म मां मर रही है। वह आप को देखने के लिए तरस रही है, आप फौरन चलिये।"



रुस्तम तुरंत उठकर उस चालबाज बुढ़िया के पास भागा। सिद्दीक मोची गंभीर मुद्रा में वहां से उठकर अपनी राह चल दिया।

जब रुस्तम बुढ़िया के पास पहुंचा तो वह रुक-रुक कर सांस ले रही थी। जैसे कि वह सचमुच मर रही हो। रुस्तम उसे देखने के लिए ही झुक रहा था कि दूसरी औरत बोली– "मां अब आप चैन से मर सकेंगी। अब आपका बहादुर बेटा जो आ गया है।"

मरणासन्न बुढ़िया ने हाथ उठाकर इशारा किया। जैसे कि अपने आखिरी समय में वह रुस्तम को गले लगाकर चूमना चाहती हों। रुस्तम भी इशारा समझ कर बुढ़िया के ऊपर झुक सा गया। झुकते ही बुढ़िया ने कोई जहरीली दवाई उसकी नाक से लगा दी। रुस्तम उसी वक्त बेहोश होकर गिर पड़ा। बुढ़िया की चाल सफल हो गई थी।

रुस्तम के गिरते ही बुढ़िया फौरन उठ खड़ी हुई। और हुक्म देने लगी– "इसको जल्दी से बांध दो।"

औरतों ने फौरन ही रुस्तम को रस्सियों से जकड़कर बांध दिया और चारों ओर नजरें दौड़ाकर पहले से ही तैयार रखी हुई एक डोली पर उसे डालकर भगा ले चली।

बुढ़िया व उसके सब साथियों ने मिलकर रुस्तम को हाकिम के पास महल के बाहर लाकर पटक दिया। उस महल में शानदार कालीनों और मखमल की मुलायम गद्दियों पर रईस लोग बैठे हुए थे। उनके सामने तोहफों के तौर पर बेशकीमती कपड़े रखे हुए थे। जैसे ही हाकिम को इस बात की खबर मिली वह खुशी से फूल उठा और बोला– "ये बेशकीमती तोहफे आपके लिए है। हम उम्मीद करते है कि आप हमें ऐसा और भी मौका देंगी।"

सलीमबाय भी खुशी से अपनी मूंछे तानते हुए बोला– "कल हम सब लोगों को मैदान में एकट्ठा करके उनके सामने इस बागी को फांसी पर लटका देंगे। और वहीं आपको तोहफों से लाद देंगे।"

बुढ़िया ने तीखी हंसी हंसते हुए सलीमबाय की ओर देखा और बोली– "अरे, जमींदार साहब यह तो एक बहुत बड़ी गलती होगी। यह बात ध्यान रखना कि इस छोकरे को लोगों के सामने किसी भी हालत में नहीं ले जाया जा सकता। फिर इस बागी को कल तक जिंदा छोड़ना खतरे से खाली नहीं। जैसे ही ये होश में आयेगा सारी रस्सियों को तोड़कर आजाद हो जायेगा। इसे तो हमें फौरन खत्म कर देना चाहिए।"

आखिर इस दुष्ट को पकड़वाया भी तो तुम्हीं ने है।

"अच्छा तो फिर ध्यान से सुनों," बुढ़िया बोली, ऊंचे पहाड़ "तेपा" पर एक बहुत बड़ी खाई है जिसका अंत किसी ने नहीं देखा है। उस खाई के घोर अंधेरे में बहुत से राक्षस और अजदहे रहते हैं, आखिर, उन्हें भी तो कुछ खाने को चाहिए।

अगले ही दिन रुस्तम को "तेपा" पर ले जाकर खाई में फेंक दिया गया। रुस्तम जब जंगल

में रहता था, तो वह सुबह उठकर बासुरी पर एक धुन बजाता था, जो सभी लोगो को पसंद आती थी। इस धुन को सुनकर रुस्तम के लकड़हारे दोस्त अपनी-अपनी झोंपड़ियों से निकलकर अपना काम शुरू कर देते थे। इस तरह बांसुरी की आवाज उनके लिए दिन का सूचक थी।

पर आज तो दिन निकलने पर भी कोई आवाज सुनाई नहीं दी। पहले तो काफी देर तक लकड़हारों ने सोचा कि दिन तो अभी निकला ही नहीं है। पर जब काफी देर बाद तक वे लेटे-लेटे उकता गये तो अपनी झोंपड़ियों से बाहर निकलने लगे।

रुस्तक के बूढ़े पिता भी घबराये हुए उस जगह गये जहां कि रुस्तम सोता था। मगर वहां तो रुस्तम की टोपी ही दिखाई दी। बूढ़ा और भी ज्यादा घबरा गया और चारों ओर देखता हुआ जोर-जोर से आवाज देने लगा। "रुस्तम, बेटा रुस्तम।"

उसकी अवाज सुनकर सभी उसकी ओर दोड़ हुए आये। सभी बड़े परेशान हुए।

हमें पूरा जंगल छान मारना चाहिए, उनमें से कोई बोला। सोच में डूबे हुए रुस्तम के पिता को अचानक न जाने क्या सूझा कि वे औरतों की झोंपड़ियों की तरफ गये।

थोड़ी ही देर में वह हाथ में एक नासदानी लिए हुए वापस आये। जिस पर सुनहरे अक्षर से कुछ लिखा था। बूढ़े ने कुछ समय तक नासदानी को ध्यान से देखा और फिर रोब पूर्ण स्वर में बोला– "दोस्तों रुस्तम किसी की नीचतापूर्ण चाल का शिकार हो गया है। जो मुसीबत की मारी औरतें रोती हुई हमसे शरण मांगने आई थी, वास्तव में वे औरतें नहीं थी। वे मर्द थे, और यह इस नासदानी से साबित हो गया है। यह नासदानी सलीमबाय के भतीजे बूरी की है।

लकड़हारों में से एक ने अटक-अटक कर किसी तरह वे अक्षर पढ़े और बूढ़े की बात का समर्थन किया।

उधर रुस्तम उस अघाह खाई में पूरे एक दिन और रात बेहोश पड़ा रहा। धीरे-धीरे जब उसे होश आया तो उसने स्वयं को किसी अनजानी जगह में पाया। जहां घोर अंधेरा था। फिर वह सोचने लगा कि आखिर वह यहां पहुंचा कैसे? उसे सब बातें स्पष्ट हो गई।

रुस्तम ने अपने शरीर पर बंधी हुई रस्सियों को तोड़ना चाहा, मगर कमजोरी के कारण वह अचानक ऐसा नहीं कर सका। काफी कोशिशों के बाद उसके सीने के ऊपर से एक रस्सी किसी तरह टूटी। इस तरह रुस्तम इस खाई में रस्सियों से आजाद हो गया। तभी उसे अचानक कहीं दूर से रोने चिल्लाने और कराहने की आवाजें सुनाई दी। वह फौरन उस ओर बढ़ा जहां से कराहने की आवाज आ रही थी। उसने पता लगाने का निश्चय किया कि वहां क्या हो रहा है।

काफी दूर चलने के बाद हल्की सी रोशनी में उसे बांयीं ओर एक गुफा का मुंह दिखाई दिया जो एक लंबे चौड़े पत्थर से बंद किया था। कराहने की आवाजें उसी गुफा में से आ रही थी। रुस्तम ने अपना बल लगाकर उस पत्थर को एक ओर सरका दिया।

जैसे ही वह गुफा के अंदर घुसा उसे अपने पैरों के नीचे हड्डियां महसूस हुई। वह साहस

पूर्वक ओर आगे बढ़ा. गुफा के अंदर जाने पर उसे एक छोटा सा महल नजर आया जिसके बाहर मिट्टी का चबूतरा बना हुआ था। चारों ओर मिट्टी के बर्तनों में दीपक टिमटिमा रहे थे और किसी भी क्षण बुझ सकते थे। महल के सामने एक अंधकारमय स्थान दिखाई दे रहा था।

रुस्तम ने जब वहां पास आकर देखा तो उसका दिल कांप उठा। बर्फीले पानी से भरे एक बहुत बड़े मिट्टी के पात्र में एक सत्रह वर्ष की लड़की कैद थी। उसके दोनों हाथ रस्सियों से दीवारों से बंधे हुए थे। आश्चर्य की बात यह थी कि उस लड़की की चालीस चोटियां थी जो दीवार में गड़ी चालीस खूटियों से बंधी हुई थी।

वह लड़की बड़ी मुश्किल से सांस ले पा रही थी और लगता था कि वह अब मरी कि जब मरी। लड़की बहुत अधिक सुंदर थी।

रुस्तम ने व्यर्थ ही अपना समय इधर-उधर की बातें सोचने में नहीं गंवाया। उसने फौरन खूटियां उखाड़कर लड़की को मुक्त कर दिया। लड़की इतनी कमजोर हो गई थी कि वह अपने स्थान पर खड़ी भी न हो सकी और जमीन पर गिर पड़ी। उसकी सांस इतनी धीमे चल रही थी कि लगता था कि वह मरने वाली है। उसी समय वहां एक कुबड़ा टेढ़े पैरों वाला, बहुत लम्बे बालों वाला बौना आया। जिसके साथ एक बूढ़ा सा व्यक्ति भी था। उस बूढ़े की नाक बहुत अधिक लंबी थी और सिर के स्थान पर चेहरे पर कुछ बाल थे।

बौना पाताल की दुनिया के डाकुओं का सरदार था। और बूढ़ा एक जादूगर था तथा बौने का सहयोगी भी था। बौना उस लड़की को इस जादूगर की मदद से उड़ा लाया था। वह उस लड़की को अपनी पत्नी बनाना चाहता था। मगर वह किसी भी तरह से तैयार नहीं हो रही थी।

रुस्तम पर नजर पड़ते ही डाकू ने बूढ़े की तरफ देखकर इशारा किया और गुस्से में आकर बोला– "लगता है कोई मेरे गुस्से की परवाह किए बिना ही इस लड़की को बचाने के लिए आया है।"

रुस्तम चुपचाप खड़ा उन दोनों शैतानों को देखता रहा। "ऐ छोकरे, तू कौन है ? अगर अपना नाम बताये बिना मरना नहीं चाहता तो अपना नाम बता।" डाकू गरज कर बोला और रुस्तम की ओर बढ़ा।

रुस्तम का छोटे बच्चे की तरह मजाक उड़ाने के इरादे से डाकू ने अपना हाथ उसके कान की ओर बढ़ाया, पर अचानक उसे उसके सीने में एक इतना जोर का घूसा पड़ा कि वह तीन कलाबाजियां खाता हुआ बूढ़े से टकराया और उसे भी साथ में गिराता हुआ उसी के ऊपर गिर पड़ा। उठने की कोशिश में उसने बूढ़े की रही सही जान भी निकलवा दी और बूढ़ा मर गया।

बौना किसी तरह उठा। उसके सहयोगी का तो अंत हो चुका था। उसका चेहरा गुस्से से विकृत हो गया। अपनी तलवार निकाल कर वह रुस्तम की ओर बढ़ा। रुस्तम ने पहले से ही मिट्टी के उस पात्र को अपने सिर पर उठाये रखा था जिसमें कि वह सुंदर लड़की कैद थी। रुस्तम ने पूरी ताकत के साथ वह बर्तन डाकुओं के उस सरदार के सिर पर दे मारा।



सिर में मिट्टी का वह पात्र लगते ही डाकू जमीन पर गिर पड़ा और धराशायी हो गया। रुस्तम ने फौरन डाकू के हाथ लगी हुई तलवार उठाली और डाकू की गर्दन पर पूरी ताकत से वार कर दिया। उसका सिर धड़ से अलग हो गया। सिर हाथ में लेकर रुस्तम उस खूबसूरत कन्या के पास पहुंचा।

वह लड़की बेहोश पड़ी थी। उसकी आंखें लंबी-लंबी थी जो बहुत ही सुंदर प्रतीत होती थी। गर्दन तो बिलकुल सुराही जैसी थी। रुस्तम उसके पास बैठ गया। उसने उसका सिर अपनी जांघ पर रख लिया और कोशिश करने लगा कि लड़की होश में आ जाए।

आखिर रुस्तम की मेहनत सफल हो गई। कुछ देर बाद ही लड़की की पलकें और होंठ हिलने-डुलने लगे। रुस्तम तुरंत भाग कर गया और अपनी अंजलि में पास ही के एक ताल में से पानी भर लाया। उसने अपनी अंजलि को लड़की के होंठों से लगा दिया।

कुछ ही देर में लड़की को पूरी तरह होश आ गया। उसने भयभीत आंखों से रुस्तम की ओर देखा और पूछा– " आप कौन हैं और यहां कैसे पहुंच पाये? मुझे तो उस बौने ने कैद किया था, मैं आप के पास कैसे पहुंची। अगर उसे पता चल गया कि मैं आप के पास हूं तो वह मेरे साथ आपको भी तड़पा-तड़पा कर मार देगा।"

रुस्तम ने प्यार भरी दृष्टि डालते हुए कहा– "अब आप आजाद हो चुकी हैं। आप जहां जाना चाहती हैं मैं आपको वहां पहुंचा दुंगा।"

लड़की विस्मित होकर बोली– "क्या आप सच कह रहें हैं? ऐसा तो हो ही नहीं सकता। इतने सालों से उसके पंजों में फंसा एक भी आदमी यहां से बच कर नहीं गया। उस खून के प्यासे और भयानक आदमी को खूनी राक्षस के नाम से जाना जाता है। इस राज्य में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो उससे डरता न हो, यहां तक कि नन्हें बच्चे उसका नाम सुनकर रोना बंद कर देते हैं। हजारों सैनिक भी उस नरपिशाच का सामना करने से घबराते हैं।"

"क्या इसी तलवार से वह डाकू पूरी सेना को मार भगाता था।" रुस्तम ने डाकू से छीनी हुई तलवार दिखाते हुए पूछा।

"यह आपके हाथ कैसे लगी ?" लड़की ने खुश होते हुए पूछा?

रुस्तम ने तलवार के साथ उसका सिर भी उस लड़की को दिखाया। लड़की ने चैन की सांस ली। तभी लड़की को जैसे कुछ ध्यान आ गया है। उसने रुस्तम की ओर गौर से देखा और फिर खुशी से चहकते हुए प्रसंशा भरे स्वर में बोली– "महाबली रुस्तम। आप धन्य हैं।"

रुस्तम यह शब्द सुनकर आश्चर्य से पूछ बैठा– "आप को कैसे पता चला कि मैं रुस्तम हूं?"

"मेरा नाम तोंगगुली है। आपके बारे में केवल मैं ही नहीं यहां के सारे लोग जानते हैं। जो न जाने कितने सालों से आपके आने की प्रतीक्षा कर रहें हैं। इस नरपिशाच का अन्त कर इसके

कुटिलतापूर्ण कार्यों से केवल आप ही हमें बचा सकते थे। आपका नाम रुस्तम हैं, आप लकड़हारे हैं। आप बहादुरी से जनता के शत्रुओं से लड़कर जनता ही रक्षा करते हैं। ये सब बातें मुझे मेरे बाबा ने सुनायी थी। चलिये मैं आपको हमारे लोगों से मिलाती हूं। यह मेरा सबसे पहला कर्तव्य हैं।"

वे दोनों उसी गुफा के दूसरे छोर पर स्थित शहर की ओर चल दिए। रास्ते में उस लड़की ने रुस्तम को अपने देश के बारे में बहुत सी बातों से अवगत कराया।

सुबह होते-होते वे एक मैदान के पास पहुंचे जहां लोगों की बहुत बड़ी भीड़ जमा थी। लोगों के चेहरे को देखते पता चलता था कि उनके ऊपर कोई मुसीबत आने वाली है। बहुत से लोग रो रहे थे। कुछ बेबश होकर चीख रहे थे और चिल्ला रहे थे। कुछ बेहोश हो चुके थे और जो धैर्यवान और साहसी थे वे अपने साथियों को दिलासा दे रहे थे।

थोड़ी ही दूर पर एक चबूतरे पर एक चौदह वर्ष का लड़का और एक भेड़ बंधी थी जिनकी आंखों में पट्टियां बंधी थी। कुछ लोग रोते-बिलखते हुए उस लड़के की तरफ भाग रहे थे। पर बाकी लोग उसके पास जाने से रोक रहे थे। रुस्तम यह सब देखकर आश्चर्यचकित रह गया और उसने लड़की से पूछा– "तोंगगुली आखिर बात क्या है?"

इधर तोंगगुली का भी रोते-रोते बुरा हाल हो रहा था। उसने आंसू बहाते हुए जवाब दिया।

"अच्छा होता अगर मैं पैदा ही न हुई होती। इससे कम से कम मुझे इतनी सारी मुसीबतें तो न देखनी पड़ती। दो साल से यह नजारा आम हो गया है। पिछले दो सालों से एक अजदहा हमारे इलाके में घुस आया है। पशुओं व मनुष्यों को खाकर उसने न जाने कितने ही परिवारों को बुरी तरह तबाह कर दिया है।

लोग इसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पा रहे हैं। वह अजदहा उस सामने वाली गुफा में रहता है जो कि चबूतरे के पास है। एक बार तो यह हमारे शहर में घुस आया तो लोग एक लड़का और एक भेड़ देकर ही इसे रोक पाये। तब से प्रतिदिन यही करना पड़ता है। लड़के और भेड़ को खाने से अजदहे का पेट भर जाता है। और वह वहीं से वापिस लौट जाता है।

जिस आदमी की भी बारी आती है उसे अपना बेटा देना होता है और जिसके कोई बच्चा न हो उसे भेड़ देनी पड़ती है। पिछले साल लगभग इसी समय मेरा तेहर बर्षीय भाई चेरगुल भी इसी के हाथ शिकार हुआ था। और लगता है आज भी किसी बड़े आदमी के बेटे की बलि चढ़ाई जा रही है। देखिये कितने सारे लोग इकट्ठा हो गये हैं।"

अचानक भीड़ में बुरी तरह हलचल मच गई। बहुत से लोग आसमान की ओर हाथ उठाकर मदद मांगने लगे। "हाय, हाय अजदहा लड़के ही ओर बढ़ रहा है। तोंगगुली की आवाज कांप उठी और वह बेहोश होकर गिर पड़ी।"

रुस्तम ने नजर घुमा के देखा एक काला भुजंग अजदहा धीरे-धीरे रेंगता हुआ लड़के की

ओर बढ़ रहा था। भेड़ अजदहे की गंध पाकर छटपटा उठी। लडका भी हृदयविदारक आवाज में अपनी मां को पुकारते हुए छटपटाने लगा।

रुस्तम यह दृश्य न देख सका और फौरन उस चबूतरे की ओर लपका जिस पर कि लड़का और भेड़ बंधे हुए थे। इसी बीच अजदहा चबूतरे के बिल्कुल नजदीक पहुंच गया और अपनी लंबी जीभ बाहर निकालने लगा। जैसे ही अजदहे ने अपना मुंह लड़के को निगलने के लिए बढ़ाया उसके एक पेड़ के तने की भयंकर चोट पड़ी।

अजदहा दर्द से पागल हुआ बड़े जोर से दहाड़ मार कर पीछे मुड़ने ही वाला था कि रुस्तम फुर्ती से उछलकर उसकी गर्दन पर सवार हो गया और उसकी गर्दन अपने दोनों पैरों के बीच दबाकर तलवार के एक ही वार से काट डाला।

लड़का, जिसे अजदहा निगलने वाला था, रुस्तम के गले से लिपट गया। लोग खुशियां मनाने लगे। उनके लिए आज का दिन एक बहुत बड़ा वरदान वाला दिन साबित हो गया। लोगों ने रुस्तम को उठाकर कंधों पर डाल लिया। भीड़ में से एक लंबें कद का सफेद दाढ़ी वाला आदमी निकल कर रुस्तम के पास आया और आंखों में खुशी के आंसू भरकर बोला– "महाबली तुम धन्य हो जो तुमने हमें इस मुसीबत से छुटकारा दिला दिया। तुम कौन हो ?"

तभी तोंगगुली को भी होश आ गया। उसने देखा सब लोग खुशी के मारे पागल हो रहें हैं और रुस्तम को घेरे हुए खड़े हैं। जैसे ही तोंगगुली रुस्तम के पास आयी तो उसी लम्बे कद वाले आदमी ने खुशी से तोंगगुली को गले से लगा लिया। और रोते हुए कहने लगा– "मेरी बेटी, तू जिंदा है ? तुझे उस गुफा से बचाकर कौन लाया ?"

तोंगगुली बोली– "पिताजी ! जिस आदमी ने आप सबकी जान बचाई है वही मुझे भी गुफा से बचाकर लाया है। जिसकी प्रसंशा के आप गीत गा रहें हैं यह वही रुस्तम है। इन्हीं ने मुझे उस खूनी राक्षस के पंजों से छुड़ाया हैं।"

सारे लोग रुस्तम की प्रसंशा करते हुए उसके साथ अपने शहर चल पड़े। लोगों ने बहुत दिनों तक रुस्तम के साथ खुशियां मनायीं। रुस्तम कुछ समय तक तो उनके साथ खुशी-खुशी से रहा फिर वह उदास सा रहने लगा। उसे अपने पिता और दोस्तों की याद आ रही थी। वह जल्दी से जल्दी अपने बूढ़े और दोस्तों के पास लौट जाना चाहता था।

एक दिन रुस्तम ने तोंगगुली और उसके पिता को अपने पिछले जीवन का पूरा इतिहास सुनाया। साथ में यह भी बताया कि किस तरह उस चालाक बुढ़िया ने कुटिलता से उसके हाथ-पांव बांधकर उस खाई में फिंकवा दिया था। यह बताकर कि उसे अपने देश की बहुत याद आ रही है। उसने अपने देश जाने वाले रास्ते के बारे में पूछा। बहुत देर तक सोच में डूबे हुए बाबा ने एक गहरी सांस ली और रुस्तम की ओर देखकर बड़े उदास स्वर में बोला– "हे मेरे बहादुर मित्र, जब से यह दुनिया बनी है, एक भी आदमी यहां से तुम्हारे देश नहीं पहुंचा है। हमारे दादा-परदादाओं के द्वारा सुनायी गयी कहानियों के अनुसार हमारे शहर से बहुत दूर एक चालीस पहाड़ नाम की ऊंची



चोटी है। सुना है, उस चोटी पर से ही एक रास्ता सुनहले देश (रुस्तम के देश का नाम) की ओर जाता है। उस रास्ते को हममें से किसी ने भी नहीं देखा है। हजारों लोग उस चोटी की ओर जा चुके हैं, पर कोई भी जिंदा वापिस नहीं आया है।"

"वहां जाने का रास्ता भी बहुत खतरनाक हैं, कदम-कदम पर तरह-तरह के जंगली जानवर मिलते हैं। उस चोटी का नाम भी चालीस पहाड़ यूं ही नहीं पड़ा। वे चालीस चिकने और सीधे पहाड़ एक के ऊपर एक खड़े हैं और हर पहाड़ कई हजार गज ऊंचा है।

मेरे दोस्त, तुम वहां लौटने का इरादा छोड़ दो और हमारे साथ रहकर हमारे सरदार बन जाओ। हमारा दिल अब तुम्हें छोड़ने को बिल्कुल नहीं कहता है।".

रुस्तम आदर से अपना सिर झुकाता हुआ बोला– "इसमें कोई संदेह नहीं कि आप बहुत ही नेक और भले आदमी है। सचमुच ही मुझे इस दुनियां के सारे खतरों और मुसीबतों से बचाना चाहते हैं। पर मेरे पिता और दोस्त तो सुनहले देश में हैं। मेरे बिना वे लोग कैसे जी रहे होंगे। उनसे मिले बगैर मैं भी इस दुनियां में तड़पता रहूंगा। और कभी सुखी न रह सकूंगा।"

बाबा ने रुस्तम की भावनाओं को समझकर न चाहते हुए भी उसे अपने देश लौटने की इजाजत दे दी। शहर के सबसे बुजुर्ग एवं सम्मानीय व्यक्ति ने रुस्तम का माथा चूमकर उसे पांच हाथ लंबा तीर– कमान दिया और बोला– "हमारी ओर से तुम्हें यह तुच्छ भेंट है। रास्ते में तुम्हारी ये रक्षा करेंगी। यही ऊपर वाले से हमारी प्रार्थना है।"

इस तरह रुस्तम ने हाथ हिलाकर उस शहर के लोगों से विदाई ली। और उस पहाड़ी की ओर चल पड़ा । उसे रास्ते में कई रेगिस्तान, नदियां और पहाड़ियां पार करनी पड़ी। अंत में वह चालीस पहाड़ की तलहटी में आ पहुंचा। पहाड़ की ओर देखते ही उसका दिल धक से रह गया। वास्तव में उस चिकने पहाड़ पर चढ़ना असंभव सा लगता था। एक पहाड़ के ऊपर दूसरा पहाड़ इस तरह खड़ा था कि चोटी भी दिखाई नहीं देती थी। यह समझ नहीं आ रहा था कि इस पहाड़ पर आखिर चढ़ा कैसे जाए।

अचानक रुस्तम को दूर से ही एक दहाड़ आती सुनाई दी। एक पल बाद ही एक शेरनी इधर-उधर पत्थर छिटकाती रुस्तम की ओर भागती नजर आई। रुस्तम ने झपट कर अपनी तलवार म्यान में से निकाल कर उसकी ओर तान दी। पर शेरनी यह देखकर रुक गई और सिर झुकाकर रुस्तम से बोली "ऐ नेक आदमी मेरी मदद कर। मेरे बच्चों को मरने से बचा ले।"

रुस्तम ने शेरनी के सिर पर हाथ फिराकर प्यार से पूछा– "मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं। तुम जो कहो में करने को तैयार हूं।"

शेरनी रुस्तम को इशारा करके चट्टान के पीछे लपकी। रुस्तम उसके पीछे-पीछे दौड़ता हुआ एक गुफा के पास पहुंचा जहां बैल के बराबर का एक बिच्छू मुडरा रहा था। यह बिच्छू गुफा में छूपे शेरनी के दो बच्चों को डंक मारना चाहता था। रुस्तम ने सीधे बिच्छू के सिर का निशाना लगाकर एक तीर मारा, जिससे वह बेहोश होकर एक ओर लुढ़क गया।

फिर उसने फोरन अपनी तलवार से बिच्छू के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। शेरनी के बच्चे जो अब तक डरकर गुफा में छुपे हुए थे भागकर बाहर निकले और अपनी मां से लिपट गये।

शेरनी ने सिर झुकाकर रुस्तम के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। महाबली रुस्तम अब तक बुरी तरह थक चुका था। इसलिए उसे वहीं नींद आ गई।

इधर शेरनी भी अपने दोनों बच्चों को रुस्तम के पास छोड़कर भोजन की तलाश में चली गई। शेरनी के बच्चे वहीं आपस में खेलने लगे। उसी समय शेर भी एक भेड़ को अपने मुंह में दबाकर आ पहुंचा। रुस्तम को देखते ही शेर भेड़ छोड़कर रुस्तम की ओर लपका, पर उसके बच्चे उससे लिपट गये और बोले– “इस मनुष्य को स्पर्श भी न कीजिए। इसने तो हमें मरने से बचाया है।”

शेर यह जानकर ठगा सा रह गया। उसी समय शेरनी भी भोजन के साथ वापस आ गई और रुस्तम का सारा किस्सा शेर को सुनाया। साथ ही में वह बिच्छू को भी शेर को दिखाया।

शाम को जब रुस्तम की नींद खुली तो उसने देखा कि बहुत से शेर उसके चारों ओर पहरा दे रहें हैं और उसके जागने की प्रतीक्षा कर रहें हैं। उन सब शेरों में एक शेर सबसे अलग-थलग नजर आ रहा था। उसकी आयत व मूंछे काफी घनी थी। वह ओर शेरों से कुछ ऊंची जगह पर बैठा हुआ था। वह शेर उन सब पहाड़ी शेरों का मुखिया था। रुस्तम उठा और सबसे पहले उसने मुखिया का अभिवादन किया। शेरों का मुखिया अपने पंजे रुस्तम के कंधे पर रखकर बोला–

“तुमने उस भयावने बिच्छू को मारकर बहुत सहायता की है। उसके डर से हम भागते–फिरते थे। उसे मारकर तुमने हमारी जाति को नष्ट होने से बचा लिया। बताओ बहादुर तुम्हारी ऐसी कौन सी इच्छा है जिसे हम पूरा कर सकते हैं?”

रुस्तम सिर झुका कर बोला “मैं आपसे और कुछ नहीं चाहता बस मैं अपने पिता और मित्रों के पास जाना चाहता हूं।”

“पर वे कहा रहते हैं?” शेरों के मुखिया ने पूछा। वे लोग सुनहले देश के पहाड़ी जंगल में रहते हैं। रुस्तम ने जबाव दिया।

यह सुनकर शेरों का मुखिया दूसरे शेरों के साथ विचार- विमर्श करने लगा। रुस्तम जल्दी से जल्दी अपने देश लौट जाना चाहता था। इसलिए वह शेरों के मुखिया के उत्तर की प्रतीक्षा बड़ी अधीरता से कर रहा था।

थोड़ी देर बाद शेरों के मुखिया ने एक अजीब ढंग से बड़ी तेज दहाड़ मारी जिससे सारा आकाश गूंज उठा। उसी समय एक छोटा सा पर मोटे-मोटे पंजों वाला शेर दौड़ता हुआ वहां आ पहुंचा। आते ही वह अपने मुखिया के सामने सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

“तुम इस बहादुर नौजवान को चालीस पहाड़ की चोटी तक ले जाकर सुनहले देश का रास्ता

दिखाओं और वहां से कुछ ऐसी चीज लेकर आओ जिससे हमें विश्वास हो जाए कि तुमने इसे सही सलामत वहां पहुंचा दिया।" शेरों के मुखिया ने छोटे शेर को आदेश देते हुए कहा।

उस छोटे से शेर ने एक बार फिर अपने मुखिया का अभिवादन किया और रुस्तम के पास जाकर खड़ा हो गया। शेरों का मुखिया रुस्तम से बोला—"मेरे बहादुर तुम्हारी यह यात्रा बड़ी खतरनाक होगी। हमारा शेर तुम्हें एक ऐसी गुफा में लेकर जायेगा जिसमें घोर अंधेरा होगा और उसका अंत भी नजर नहीं आयेगा। तुम बिल्कुल भी जिद न करना और जो कुछ हमारा शेर कहे वैसा ही करना, नहीं तो कोई न कोई मुसीबत में पड़ जाओगे। उसके बाद जैसे ही तुम सुनहले देश में कदम रखोगे, हमारे शेर के जरिये हमें वहा से कोई चीज जरूर भेज देना जिससे हमें मालूम पड़ जाए कि तुम सही सलामत वहां पहुंच गये हो।"

रुस्तम इन सारी बातों को ध्यान में रखकर उस छोटे से शेर की पीठ पर बैठ गया। बाकी सारे शेर भी उस गुफा के मुंह तक रुस्तम को विदाई देने आये। छोटा शेर रुस्तम को अपनी पीठ पर बैठा कर गुफा में घुसा– थोड़ी देर एक जगह खड़ा रहा और पवन वेग से उड़ चला। बीच-बीच में वह दहाड़ता भी जा रहा था। उसके जवाब में चारों ओर से कुछ आवाजें भी सुनाई पड़ रही थी। रुस्तम ने यह जानना चाहा कि यह आवाजें किसकी है। उसने पूछा –

"वनराज ये रहस्यमय आवाजें किसकी है?" शेर बोला "मेरे बहादुर दोस्त इस समय तुम्हारा कोई भी सवाल पूछना ठीक नहीं हैं। तुम चुप ही रहो तो अच्छा है नहीं तो हम दोनों मारे जायेंगे।"

शेर अंधेरी गुफा में दौड़ता जा रहा था और वे रहस्यमय आवाजें चारों ओर से सुनाई देती जा रहीं थीं। कभी किन्हीं अदृश्य चिड़ियों के गाने की आवाज आती, कभी किसी पीड़ा ग्रस्त प्राणी के कराहने की, कभी शैतानों के नाचने गाने की तेज आवाजें सुनाई देती तो कभी लड़कियों के सुरीले गाने भी सुनाई देते। गुफा को हिला देने वाली बिजली की कड़क भी बीच-बीच में सुनाई दे रही थी। हालांकि रुस्तम को बहुत डर लग रहा था मगर फिर भी उसने उत्सुकताबश शेर से पूछा ही लिया। "वनराज यह सब क्या है? कुछ लोग रो रहें हैं कुछ लोग खुश हो रहें हैं।"

शेर ने फिर उससे प्रार्थना की–

"खुदा के वास्ते शांत हो जाओ वर्ना हम किसी भारी मुसीबत में फस जायेंगे।" रुस्तम समझ गया कि उसे शेर का कहा मान ही लेना चाहिए। वह चुपचाप शेर की पीठ पर बैठा अंधेरे में देखने की कोशिश करता रहा पर उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। इस बीच शेर भी तीर की तरह उड़ा चला जा रहा था। लगता था कि इस यात्रा का कभी अंत ही नहीं होगा। पर शेर अचानक रुस्तम से बोला–

"मेरे बहादुर दोस्त अब तुम अपनी आंखें बंद कर लो, और जब तक मैं न कहूं आंखें खोलने की हिम्मत न करना। यह उच्छी तरह समझ लो कि अगर तुमने इस समय कोई गलती कर दी तो उसके लिए तुम्हें बहुत भारी कीमत भी चुकानी पड़ सकती है।"

रुस्तम आंखें बंद कर मजबूती से शेर की गर्दन से चिपक गया। शेर और ज्यादा तेजी से



भागने और जोर से दहाड़ने लगा। अब रुस्तम को भी डर लगने लगा। नसें तन गई थी जिसके कारण लगातार पसीनों की धारें रुस्तम के बदन से छूट रही थी। न जाने कितनी देर तक शेर यूंही तीर की तरह उड़ता रहा। अचानक रुककर शेर बोला–

"अब उतर जाओ, और अपनी आंखें खोल लो।" रुस्तम ने आंख खोली तो उसने अपने आप को पहाड़ की चोटी पर पाया। हवा में फूलों, हरे-भरे पेड़ों और घास की सुगंध तैर रही थी तथा चश्मों का स्वच्छ जल कल-कल की आवाज करता हुआ बह रहा था। लगता था जैसे कोई माली इन सब फूलों और पेड़-पौधों को संभाल कर रखता हो।

"क्या इन सुंदर बागों और फुलवारियों में कोई रहता हैं।" शेर इतना थक गया था कि रुस्तम की वह किसी भी बात का जवाब न दे सका। वह बिना कुछ कहे-सुने पास में बहते चश्में की ओर चला गया।

चश्में में नहाने के बाद पहले जैसा चुश्त एवं तरोताजा नजर आने लगा था। रुस्तम शेर में यह आश्चर्यजनक परिवर्तन देखकर हैरत में पड़ गया। शेर रुस्तम को इस हालत में देखकर हंसते हुए बोला–

"मेरे दोस्त अब में तुम्हारे सब सवालों का जवाब दे सकता हूं। हंसने, रोने, नाचने-गाने की जो आवजें तुमने सुनी वे सुनहले देश के लोगों की ही थी। जब उनमें से कोई रोता- चिल्लाता, बिलखता है तो दूसरा इस पर खुश होकर नाचता है। इस दुनिया के लोग एक दूसरे के प्रति कुछ ऐसा ही व्यवहार करते हैं। इसके बाद जब मैंने तुमसे कहा था कि तुम अपनी आंख बंद कर लो तब हम उस स्थान से गुजर रहे थे, जहां तुम्हारे मित्रों का जीवन दिखाई दे रहा था। तुम्हारी दृष्टि उनकी आत्माओं के ऊपर नहीं पड़नी चाहिए थी। क्योंकि यह तुम्हारे लिए बहुत खतरनाक होता। इस फुलवारी के बारे में तुम्हारी उत्सुकता शांत करते हुए मैं बताता हूं कि मनुष्य जाति में यहां तक पहुंचने वाले तुम पहले आदमी हो। पहले इस स्थान की रखवाली मेरे दादा-परदादा करते थे और अब यह जिम्मेदारी मेरी हैं। हमारी इस पीढ़ी के शेरों में सिर्फ मैं ही यहां आ जा सकता हूं।

पर देर सबेर यहां का वास्तविक मालिक जरूर आयेगा और उसके आने के बाद इन रहस्यमय पहाड़ों की ढलाने, फले–फूले बागों और घाटियों में बदल जायेंगी।"

रुस्तम सम्मोहित सा हुआ यह सब सुनता रहा, पर फिर भी पूछ ही बैठा– "पर इस स्थान का वास्तविक मालिक कौन हैं और वह कब आयेगा।?"

यह कहना तो बहुत कठिन है कि इस स्थान का वास्तविक स्वामी कौन है ? परन्तु हमारे दादा-परदादाओं के किस्सों में केवल इतना कहा गया है कि वह जब यहां आयेंगे तब सूरज की किरणें यहां का सारा अंधकार दूर कर देंगी।

"अच्छा मेरे बहादुर मित्र, यहां से आगे का सफर तुम्हें अकेले ही तय करना होगा। तुम तो जानते ही हो कि हमारे मुखिया ने तुम्हें यहां तक सही सलामत पहुंचाने की निशानी के तौर पर दिखाने के लिए सुनहले देश की कोई चीज मंगाई है।" शेर ने कहा।

इतना कह कर शेर रुस्तम को पहाड़ के कगार की ओर ले गया जहां पर कहीं ऊपर से किसी पेड़ की मोटी-मोटी जड़ें लटकी हुई थी। और बोला—

"इन जड़ों को पकड़कर तुम्हें ऊपर चढ़ना है। वहां तुम्हें एक छेद दिखाई देगा वहीं से सुनहले देश का रास्ता शुरू होता है। तुम वहां से मिट्टी का ढेला उठाकर मेरे पास फेंक देना, जिसे मैं शेरों के मुखिया को दिखा दुंगा।

यह सब सुनकर रुस्तम बहुत खुश हुआ। मगर अब वह इस चिंता में पड़ गया कि वह इन जड़ों तक कैसे पहुंच पायेगा। क्योंकि सबसे निचली जड़ भी काफी ऊंचाई पर थी जहां तक पहुंचना संभव नहीं था। शेर रुस्तम के चेहरे के भावों को समझ गया। वह बोला—"आओ मेरे बहादुर दोस्त, फिर से मेरी पीठ पर बैठों मैं जाते-जाते आखिरी बार तुम्हारी मदद किये देता हूं।"

रुस्तम शेर की पीठ पर बैठ गया। शेर कुछ पीछे हटकर काफी ऊंचाई तक उछला। जैसे ही रुस्तम उस जड़ की ऊंचाई तक पहंचा। उसने उछलकर जड़ को पकड़ लिया और तेजी से ऊपर चढ़ने लगा।

उस छेद तक पहुंचते ही रुस्तम ने वहां से मिट्टी का एक ढेला उठाया और एक छोटे से कपडे में बांधकर शेर की ओर उछाल दिया। उसने हाथ हिलाकर शेर को वहां से अपनी निशानी के साथ विदा कर दिया।

सुबह होते-होते रुस्तम अपने सुनहले देश के जंगलों में पहुंच गया। वह तुरंत भागता-भागता सबसे पहले रीछनी की गुफा के बाहर पहुंचा। उसने देखा कि रीछनी उसके दोस्त को अपने सीने से चिपटाये वहां उदास बैठी हुई है। रुस्तम को देखते ही रीछनी खुशी से पागल हो गई और भागकर उसने रुस्तम को गले लगा लिया। रीछनी ने रो-रो कर उसे यह किस्सा सुनाया।

तुम्हारे जाने के बाद ही हाकिम ने अपने सैनिकों के साथ मिलकर हम पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने हमारे घर जला डाले और हमारे सभी दोस्तों के हाथ-पैर बांधकर ले गये। गड़रियों ने हमें बताया है कि सब लकड़हारों को लोगों के सामने आज फांसी दी जायेगी। अब तुम्हीं बताओ रुस्तम हमें क्या करना चाहिए।

"हम लोगों को तुरंत उस जगह पहुंचना चाहिए जहां कि हमारे साथियों को फांसी दी जानी है।" रुस्तम ने चिंतित होते हुए रीछनी से कहा।

शाम होते-होते रुस्तम और रीछनी शहर पहुंचे। बड़े मैदान में लोगों की भीड़ इकट्ठी हो रही थी। सब रो रहे थे। अनेक लोग बेबश हुए सहमें-सहमें से सिर लटकाये खड़े थे। मगर पास ही में खड़े दो सौ सैनिकों और बीस जल्लादों के चेहरे पर कोई शिकन नहीं था।

कुछ लोग ऐसे भी थे जो बेफिक्री से एक ओर खड़े फांसी के नजारे का आनंद लूट रहे थे।

फांसी के तख्तों के बांयी ओर लोहे के पिंजरे रखे हुए थे। जिसमें बच्चों को बंद कर दिया

गया था। उनके शरीर अधनंगे थे और उनके शरीर धूप में सूखकर कांटे हो गये थे। भूख और प्यास से तड़पते देख वे जिंदा कंकालों से नजर आ रहे थे। उनमें सिद्दीक मोची की बेटी जोहरा अलग ही दिखाई दे रही थी। क्योंकि वह शांत बैठी थी।

अचानक नगाड़े बज उठे। हाकिम के सैनिक और जल्लाद फांसी के तख्तों और पिंजरों के करीब आते दिखाई दिये। उनके साथ कुछ बंदी भी थे जिनमें रुस्तम के पिता सबसे आगे दिखाई दे रहे थे। सभी लोगों को फांसी के तख्तों के पास लाया गया।

कैद किए हुए कुछ बच्चे अपने माता-पिता को पहचान कर हाथ पसार-पसार कर रोने-बिलखने लगे। कुछ बच्चे जिनमें इतनी ताकत भी न रह गई थी कि खड़े हो सके। पिंजरों की सलाखों में से अपने सूखे और कमजोर हाथ निकाल-निकाल कर चिल्लाने लगे-" पिताजी मुझे बचा लीजिए।" फांसी पर चढ़ाये जाने वाले कैदी अपने बच्चों को पिंजरों में तड़पते और रोते-बिलखते देख स्वयं भी रोने लगे। केवल जोहरा ही अपने आप पर काबू किये हुए थी, पर उसकी आंखों से कभी-कभी आंसू टपक पड़ते थे। अपने फटे कपड़ों और बिखरे बालों के बावजूद भी वह सुंदर लग रही थी।

सलीमबाय अपने काले रंग के घोड़े पर बैठा शहर के हाकिम द्वारा विद्रोहियों को फांसी दिए जाने का हुक्म पढ़ाकर सुना रहा था। नगाड़े ओर जोर से बजने लगे। जल्लाद कैदियों को अब तक फांसी के फंदे पहना चुके थे। सलीमबाय फांसी का बड़ा बेसब्री से इंतजार कर रहा था। उसने जैसे ही जल्लादों की ओर फंदा खींचने का इशारा किया वैसे ही उसकी गर्दन पर एक जोरदार मुक्का पड़ा और वह अपने घोड़े से नीचे गिर गया।

सैनिकों ने उस व्यक्ति को ढूंढने की कोशिश की तो उन के सिर पर कहीं से डंडे पड़ने लगे। जल्लादों की समझ में कुछ न आया मगर डर के मारे वे भी छुपते हुए इधर-उधर भागने लगे। मगर उनमें से कोई भी भाग नहीं पाया। पेड़ के तने की चोट उनके सिर में रह-रह कर पड़ रही थी और वे एक-एक करके गिरते चले जा रहे थे। जनता पर जुल्म ढाने वाले इन लोगों पर रुस्तम और रीछनी ने खुलकर कहर ढाया। इस बीच भीड़ में से कोई चिल्ला उठा। इस तरह सलीमबाय को केवल रुस्तम ही गिरा सकता है। चारों ओर खुशी की लहर दौड़ गई, लोग चिल्लाने लगे "हमारा रुस्तम जिंदा है, हमारा रुस्तम जिंदा है।"

अब तो जनता में भी जोश आ गया। वे भी बुरी तरह अपने-अपने दुश्मनों पर टूट पड़े। थोड़े समय के बाद ही सारे दुश्मन परास्त हो गये। रुस्तम और उनके साथी शीघ्र ही वहां से चल दिये। मैदान में सिर्फ सलीमबाय, तीस जल्लादों और दो सौ सैनिकों के शव ही नजर आ रहे थे। लोग अपने बच्चों को गोद में लेकर रुस्तम के साथ आर्चा के जंगल की ओर चल पड़े।

जब सब अपने-अपने स्थानों पर पहुंच गये तो रुस्तम के पास सिद्दीक मोची अपनी बेटी के साथ आया और बोला– "तुम्हें वह सच्ची कथा याद है जो मैं तुम्हें सुना रहा था मगर उस औरत ने हमारी बात आकर काट दी थी।"

रुस्तम बोला– "वाह उसे मैं कैसे भुला सकता हूं? मुझे वह अच्छी तरह याद है।" मुझे



भी अफसोस है कि मैं उसे पूरी नहीं कर पाया। अब आप मुझे सुनाइये। सिद्दीक मोची ने कनखियों से अपनी बेटी की ओर देखा तो उसने नजरें झुकाली।

"तुम्हारे सामने खड़ी मेरी बेटी जोहरा ही वह लड़की है जो उस दुष्ट के जुल्मों को सहते हुए भी पूरे विश्वास के साथ अपने इस साथी के लौटने की प्रतीक्षा कर रही है।"

रुस्तम ने फोरन जोहरा की तरफ देखा। अनजान बनते हुए धीमी आवाज में पूछा– "इसका बहादुर नोजवान कौन है ? और इस वक्त कहां है।"

रुस्तम से कुछ कदमों की दूरी पर ही उसके पिता खड़े थे जो लगता था सब कुछ अच्छी तरह जानते थे। सिद्दीक मोची और बूढ़े ने एक दूसरे की ओर दृष्टि डाली और मुस्करा पड़े। इसके बाद मोची ने रुस्तम से कहा–

"तुम जानना चाहते हो, वह नौजवान कौन है? वह वहीं है जिसने पूछा था इसका बहादुर नौजवान कौन है।"

रुस्तम ने आगे कदम बढ़ाते ही अपने पिता की ओर देखा और उसके पिता ने भी सिद्दीक की बात का समर्थन कर दिया।

सुबह की शीतल हवा से आर्चा के पेड़ों की सरसराहट सुहावनी लग रही थी। जैसे पेड़ भी अपने दोस्तों के वापिस आने पर प्रसन्न हो रहे थे। आर्चा के जंगल में जहां कई दिनों से उदासी छाई हुई थी अब हंसी-खुशी की अवाज गूंजने लगी और महाबली रुस्तम अपने पिता, जोहरा और सभी साथियों के साथ सुख-चैन से रहने लगा।

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

ISBN - 81-230-0515-6
मूल्य : 20/= रुपये

